सेतुबन्ध की गाथा

42. मसिणिअसिहरच्छंगों विहुअणिअम्बवणपाअडिअतुङ्गअडो।
विंझेण भरिअकुहरो हेलावाओ वि वाणराणँ ण सहिओ॥

अर्थ = वानरों द्वारा मसृणित विलुलित शिखर क्रोड उत्तुंगशिखर एवं मध्यभाग के वन प्रान्त को वानरों द्वारा उत्पाटित कर दिए जाने से प्रकट उन्नत तट तथा वानरों से पूर्ण कन्दरा प्रदेश वाला विन्ध्यपर्वत वानरों के हेलावात जंघाआदि से समुत्थयवन या सहजप्रस्थान को भी न सह सका।

43. पत्ता अ सीभराहअधाउसिलाअलणिसण्णराइअजलअँ।
सज्झं ओज्झर पहसिअ दरिमुहणिक्कन्तवउलमइरामोअं॥

अर्थ = वे वानरगण जलकणों से आहत धातुशिलापर स्थित मेघों से सुशोभित एवं प्रहसित निर्झरों से युक्त कन्दरामुख से निकलेहुए बकुल रूप मदिरा के गंध से व्याप्त सह्य पर्वत पर पहुँचे।

44. बोलन्ति अ पेच्छन्ता पडिमासंकन्तधवलघणसंघाए।
फुडफडिहसिलासंकुलखलिओवरिपत्थिए विअ णइप्पवहो॥

अर्थ = वानर गण धवल मेघ समुह की छाया से संक्रान्त होने से मेघ के प्रतिबिम्बित होने से मानों स्फुट स्फटिक शिला समुह के ऊपर स्खलित नदी प्रवाह को देखते हुए नदी प्रवाह को पारकर रहे है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

15. जलहरणिद्धाअन्त पाअवगाहणेसु सिसिरणिद्धाअन्ते ।
सइ दुद्दिणसामलअं पत्ता भग्गद्दुअचन्दणरसा मलअं ॥

अर्थ = चन्दन वृक्षों को उखाड़ एवं भूमि को कुपित करने वाले वानरगण मेघों द्वारा दावानल रहित अतएव सघन वृक्षों की छाया में मानों शिशिर निद्रायमाण है शीतलतायुक्त तथा सदा वर्षा होने के कारण श्यामल लताओं से युक्त मलय पर्वत पर पहुँचे।

16. तडपब्भारब्भरन्ता दलन्तपाआलगलिअजलपइरिक्का ।
आवाए च्चिअ जाआ पहअमहावहणिहा महाणइसोत्ता ॥

अर्थ = तटों के एकदेश भाग के मिट्टी आदि के गिरने से भरे हुए फटे हुए पाताल के दरार में जल के चले जाने से तुच्छ कम जलवाली महानदियों के स्रोत जन संकुल महापथ राजमार्ग के समान है

17. चन्दणपाअवलग्गे रुडिउव्वेल्लिअलआपरिमलच्छाए ।
संदाणिअणिम्मोए पेच्छन्ति महाभुअंगवेढणमग्गे ॥

अर्थ = चन्दन वृक्षों में लगे हुए तोड़कर फेंके गए लताओं के लिपटने के धब्बे चिन्ह की आकृति वाले एवं केंचुली से युक्त महाभुजंगों के

वेष्टन लिपटनई मार्ग को वानर देख रहे हैं। वानरों से सर्प इतना भयभीत हो गए कि अपनी केंचुली छोड़कर भाग गये"